

चौबीस ठाणा चर्चा

DR. PRAVEEN KUMAR JAIN SHASTRI,
BANSWARA

चौबीस ठाणा चर्चा

मंगलाचरण

सिद्धं सुद्धं पणमिय, जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं।
गुणरयणभूसणुदयं, जीवस्स परूवणं वोच्छं।।१।।

गुण जीवा पज्जत्ती पाणा सण्णा य मग्गणाओ य।
उवओगो वि य कमसो वीसं तु परूवणा भणिदा।।२

गइइंदिएसु काये जोगे वेदे कसायणाणे य।
संजमदंसणलेस्सा भविया सम्मत्तसण्णि आहारे ।।

झाणा वि य पच्चा वि य, जाइ य कुल कोडि संजुया सव्वे,
गह्णाति येण भणिया, कमेण चउबीस ठाणाणि।।

❋ मार्गणा ❋

१. प्रश्न : मार्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर : प्रवचन में जिस प्रकार से देखे गये हों, उसी प्रकार से जीवादि पदार्थों का जिन भावों के द्वारा अथवा जिन पर्यायों में विचार-अन्वेषण किया जाय उन्हें मार्गणा कहते हैं। (गो. जी. १४१)

जिन धर्मविशेषों से जीवों की खोज हो सके उन धर्मविशेषों से जीवों को खोजना मार्गणा है।

मार्गणा, गवेषणा और अन्वेषण ये तीनों शब्द एकार्थवाची हैं। सत्-संख्या आदि अनुयोग द्वारों से युक्त-चौदह जीवसमास जिसमें या जिसके द्वारा खोजे जाते हैं उसे मार्गणा कहते हैं। (ध. १/१३२)

२. प्रश्न : मार्गणाएँ कितनी होती हैं ?

उत्तर : मार्गणाएँ चौदह होती हैं - (१) गति (२) इन्द्रिय (३) काय (४) योग (५) वेद (६) कषाय (७) ज्ञान (८) संयम (९) दर्शन (१०) लेश्या (११) भव्यत्व (१२) सम्यक्त्व (१३) संज्ञी (१४) आहार।

३. प्रश्न : संसारी जीवों के कौनसी मार्गणाओं का अभाव भी हो सकता है?

उत्तर : संसारी जीवों के पाँच मार्गणाओं का अभाव भी हो सकता है –

१. योग – १४वें गुणस्थान में।
२. वेद – नौवें गुणस्थान के अवेदभाग से १४वें गुणस्थान तक।
३. कषाय – ग्यारहवें गुणस्थान से चौदहवें गुणस्थान तक।
४. लेश्या – चौदहवें गुणस्थान में।
५. संज्ञी – तेरहवें-चौदहवें गुणस्थान में।

४. प्रश्न : सिद्ध भगवान के कौन-कौनसी मार्गणाएँ होती हैं?

उत्तर : सिद्ध भगवान के चार मार्गणाएँ होती हैं –

१. ज्ञान – केवलज्ञान।

२. दर्शन – केवलदर्शन।

३. सम्यक्त्व – क्षायिक सम्यक्त्व।

४. आहारक – अनाहारक।

विशेष : वैसे सिद्ध भगवान मार्गणातीत होते हैं लेकिन ये चार मार्गणाएँ उपचार से कही गई हैं, क्योंकि सिद्ध भगवान के ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व आदि शुद्ध गुण होते हैं।

१. गति मार्गणा

१. प्रश्न : गति मार्गणा किसे कहते हैं ?

उत्तर : गति नाम कर्म के उदय से उस-उस गति विषयक भाव के कारणभूत जीव की अवस्था विशेष को गति कहते हैं।

जिसके उदय से आत्मा भवान्तर को जाता है, वह गति नामकर्म है। **(मू. १२३६)**

गति नामकर्म के उदय से होने वाली जीव पर्याय को अथवा चारों गतियों में गमन के कारण को गति कहते हैं। **(गो. जी. १४६)**

नोट - इन गतियों में जीवों की खोज करने को गति मार्गणा कहते हैं।

२. प्रश्न : गति मार्गणा कितने प्रकार की है ?

उत्तर : गति मार्गणा चार प्रकार की होती है- (१) नरकगति (२) तिर्यञ्चगति (३) मनुष्यगति

२. प्रश्न : गति मार्गणा कितने प्रकार की है ?

उत्तर : गति मार्गणा चार प्रकार की होती है- (१) नरकगति (२) तिर्यञ्चगति (३) मनुष्यगति (४) देवगति। **(वृ. द्र.सं. १३ टी.)** नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति, देवगति तथा सिद्धगति में भी जीव होते हैं। **(ध.७/५२२)**

३. प्रश्न : नरकगति किसे कहते हैं ?

उत्तर : जो द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव में स्वयं तथा परस्पर में प्रीति को प्राप्त नहीं होते हैं उनको नारक कहते हैं। नारक की गति को **नरकगति** कहते हैं। **(गो. जी. १४७)**

नीचे अधोलोक में घम्मा, वंशा, मेघा, अंजना, अरिष्टा, मघवा तथा माघवी नामकी सात पृथिवियाँ हैं। उनमें नारकी जीव रहते हैं। वे नारकी क्षेत्रजनित, मानसिक और शारीरिक आदि अनेक प्रकार के दुःखों को दीर्घ काल तक भोगते हैं, उनकी गति को **नरकगति** कहते हैं।

४. प्रश्न : तिर्यञ्चगति किसे कहते हैं ?

उत्तर : देव, नारकी तथा मनुष्यों को छोड़कर शेष सभी तिर्यञ्च कहलाते हैं। तियञ्चों की गति को तिर्यञ्चगति कहते हैं। (त. सू. ४/२७)

(१) जो मन-वचन-काय की कुटिलता से युक्त हो।

(२) जिनकी आहारादि संज्ञा व्यक्त (स्पष्ट) हो।

(३) जो निकृष्ट अज्ञानी हो।

(४) जिनमें अत्यन्त पाप का बाहुल्य पाया जाय वे तिर्यञ्च हैं। इन तिर्यञ्चों की गति को तिर्यञ्चगति कहते हैं। (गो. जी. १४८)

५. प्रश्न : मनुष्यगति किसे कहते हैं ?

उत्तर : जिनके मनुष्यगति नामकर्म का उदय पाया जाता है उन्हें मनुष्य कहते हैं। उनकी गति को मनुष्य गति कहते हैं।

(१) जो नित्य हेय-उपादेय, तत्त्व-अतत्त्व, आप्त-अनाप्त, धर्म-अधर्म आदि का विचार करे,

(२) जो मन से गुण-दोषादि का विचार, स्मरण आदि कर सके,

(३) जो मन के विषय में उत्कृष्ट हो,

(४) जो शिल्प-कला आदि में कुशल हो तथा

(५) जो युग की आदि में मनुओं से उत्पन्न हों, वे मनुष्य हैं उनकी गति को मनुष्यगति कहते हैं। (गो. जी. १४९)

६. प्रश्न : देवगति किसे कहते हैं ?

उत्तर : भवनवासी आदि चार प्रकार के देवों की गति को देवगति कहते हैं।

(१) जो देवगति में पाये जाने वाले परिणाम से सदा सुखी हों,

(२) जो अणिमादि गुणों से सदा अप्रतिहत (बिना रोक-टोक) विहार करते हों,

(३) जिनका रूप-लावण्य-यौवन सदा प्रकाशमान हो, वे देव हैं। उन देवों की गति को देवगति कहते हैं। (गो. जी. १५१ मं.)

७. प्रश्न : सिद्धगति किसे कहते हैं ?

उत्तर : यद्यपि सिद्ध भगवान के किसी गति नामकर्म का उदय नहीं है फिर भी आठ कर्मों का नाश करके सिद्ध भगवान लोक के अग्र भाग में गमन करते हैं।

(१) जो एकेन्द्रिय आदि जाति, बुढ़ापा, मरण तथा भय से रहित हों,

(२) जो इष्ट-वियोग, अनिष्ट संयोग से रहित हों,

(३) जो आहारादि संज्ञाओं से रहित हों,

(४) जो रोग, आधि-व्याधि से रहित हों, वे सिद्ध भगवान हैं, उनकी गति को सिद्धगति कहते हैं। (गो. जी. १५२)

जो ज्ञानावरणादि आठ कर्मों से रहित हैं, अनन्त सुख रूप अमृत के अनुभव करने वाले शान्तिमय हैं, नवीन कर्म बन्ध के कारणभूत मिथ्यादर्शनादि भाव कर्म रूपी अञ्जन से रहित हैं, नित्य हैं, जिनके सम्यक्त्वादि भाव रूप मुख्य गुण प्रकट हो चुके हैं, जो कृतकृत्य हैं, लोक के अग्रभाग में निवास करने वाले हैं, उनको सिद्ध कहते हैं और उनकी गति को सिद्धगति कहते हैं। (गो. जी. ६८)

नरक-गति

क्र.	स्थान	संख्या	विवरण	विशेष
१.	गति	१	नरकगति	
२.	इन्द्रिय	१	पंचेन्द्रिय	
३.	काय	१	त्रस	
४.	योग	११	४ मनो. ४ वच. ३ काय.	औदारिकद्विक तथा आहारकद्विक नहीं हैं।
५.	वेद	१	नपुंसक	
६.	कषाय	२३	१६ कषाय ७ नोकषाय	स्त्रीवेद तथा पुरुषवेद नहीं हैं
७.	ज्ञान	६	३ कुज्ञान, ३ ज्ञान	मन:पर्यय तथा केवलज्ञान नहीं है।
८.	संयम	१	असंयम	
९.	दर्शन	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि	केवलदर्शन नहीं है।
१०.	लेश्या	३	क. नी. का.	शुभ लेश्याएँ नहीं हैं।
११.	भव्यत्व	२	भव्य, अभव्य	

१२.	सम्यक्त्व	६	क्षा.क्षयो.उप.सासा.मिश्र.मि.	
१३.	संज्ञी	१	सैनी	
१४.	आहार	२	आहारक, अनाहारक	
१५.	गुणस्थान	४	मि. सा. मिश्र अविरत.	
१६.	जीवसमास	१	सैनी पंचेन्द्रिय	
१७.	पर्याप्ति	६	आ. श. इ. श्वा. भा. मन.	
१८.	प्राण	१०	५ इन्द्रि., ३ बल, श्वा. आयु.	
१९.	संज्ञा	४	आ. भ. मै. परि.	
२०.	उपयोग	९	६ ज्ञानो. ३ दर्शनोपयोग	
२१.	ध्यान	९	४ आ. ४ रौ. १ धर्म.	आज्ञाविचय धर्मध्यान होता है।
२२.	आस्रव	५१	५ मि.१२ अ.२३ क.११ यो.	
२३.	जाति	४ लाख	नरक सम्बन्धी	तिर्य., मनुष्य तथा देवों की जातियाँ नहीं हैं।
२४.	कुल	२५ ला.क.	नरक सम्बन्धी	तिर्य., मनुष्य तथा देवों के कुल नहीं हैं।

१. प्रश्न : नरक कितने हैं ?

उत्तर : नरक सात हैं - (१) रत्नप्रभा (२) शर्कराप्रभा (३) बालुकाप्रभा (४) पंकप्रभा (५) धूमप्रभा (६) तमःप्रभा (७) महातमःप्रभा। ये सात पृथिवियाँ हैं। (त.सू. ३/१)

इनमें सात नरक हैं- (१) घम्मा (२) वंशा (३) मेघा (४) अंजना (५) अरिष्टा (६) मघवा (७) माघवी। (ति.प. १/१५३)

२. प्रश्न : **नरकों में सभी पंचेन्द्रिय ही होते हैं तो वहाँ कीड़ों से भरी नदी कैसे बताई गई है?**

उत्तर : यह सत्य है कि नरकों में सभी पंचेन्द्रिय ही होते हैं। एकेन्द्रिय से लेकर असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक के जीव तिर्यञ्चगति में ही पाये जाते हैं। नरकों में जो वैतरणी नदी को कीड़ों से भरी हुई बतलाया है वे कीड़े स्वयं नारकी अपनी विक्रिया के बल से बन जाते हैं। उनका कीड़ों का आकार आदि होने पर भी वे नारकी ही होते हैं क्योंकि उनके नरकगति, नरकायु आदि प्रकृतियों का उदय होता है। जैसे- नारकी हांडी, वसूला, करौत, भाला आदि रूप विक्रिया कर लेने से अजीव नहीं हो जाते, गाय आदि की विक्रिया कर लेने से गाय आदि के समान दूध देने में समर्थ नहीं हो जाते हैं वैसे ही कीड़ों के बारे में भी समझना चाहिए। **(ति. प.२/३१८-३२२ के आधार से)**

३. प्रश्न : **क्या नरक में स्थावर जीव नहीं पाये जाते हैं ?**

उत्तर : सूक्ष्म स्थावर जीव सर्व लोक में ठसाठस भरे हुए हैं। **(गो.जी. १८४)** अत: यदि नरकों में स्थावर जीव होवे तो कोई आश्चर्य नहीं है, लेकिन वे स्थावर जीव नरक की भूमि में रहने मात्र से नारकी नहीं हो जाते और न वे नरकगति के जीव ही कहला सकते हैं, क्योंकि नारकी तो वही होता है जिसके नरकायु आदि का उदय होता है। इन स्थावरों के इन प्रकृतियों का उदय नहीं होता है। अत: वे नरक भूमि में रहकर भी नारकी नहीं कहलाते हैं। जैसे- असुरकुमार आदि देव भी नरक में जाते हैं। कुछ समय तक वहाँ रुकते भी हैं। इसका अर्थ यह नहीं कि वे नारकी हो जाते हैं क्योंकि उनके देवगति नामकर्म का उदय है।

४. प्रश्न : नारकियों के कार्मण-काययोग में कौन-कौनसा गुणस्थान हो सकता है ?

उत्तर : नारकियों के कार्मण काययोग में दो गुणस्थान हो सकते हैं- (१) मिथ्यात्व (२) अविरत सम्यग्दृष्टि।

नोट-(१) कोई भी जीव दूसरे गुणस्थान को लेकर नरक गति में नहीं जाता तथा तीसरे गुणस्थान में मरण नहीं होता (ध. १) अत: ये दोनों गुणस्थान नारकियों की कार्मण काययोग अवस्था में नहीं होते हैं। (२) चौथा गुणस्थान मात्र प्रथम नरक की कार्मण अवस्था में ही होता है, अन्य नरकों में नहीं।

५. प्रश्न : नारकियों के निर्वृत्यपर्याप्तावस्था में सासादन गुणस्थान क्यों नहीं होता ?

उत्तर : सासादन गुणस्थान वाला नरक में उत्पन्न नहीं होता है, क्योंकि सासादन गुणस्थान वाले के नरकायु का बन्ध नहीं होता है। जिसने पहले नरकायु का बन्ध कर लिया है, ऐसे जीव भी सासादन गुणस्थान को प्राप्त होकर नारकियों में उत्पन्न नहीं होते हैं; क्योंकि नरकायु का बन्ध करने वाले जीव का सासादन गुणस्थान में मरण नहीं होता है। (ध. १ /३२५-२६)

६. प्रश्न : नारकियों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितने योग होते हैं ?

उत्तर : नारकियों की निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में एक योग ही होता है- वैक्रियिकमिश्रकाय योग। क्योंकि कार्मण-काययोग विग्रहगति में तथा शेष योग पर्याप्त अवस्था में ही होते हैं।

७. प्रश्न : नारकियों के आहारक अवस्था में कितने योग होते हैं ?

उत्तर : नारकियों के आहारक अवस्था में दस योग होते हैं –

४ मनोयोग, ४ वचनयोग, २ काययोग (वैक्रियिक द्विक)

८. प्रश्न : नारकियों के नपुंसक वेद ही क्यों होता है ?

उत्तर : नरक गति पाप के उदय से प्राप्त होती है। वहाँ जीवों को दुःख ही दुःख होते हैं। स्त्रीवेद वाला पुरुष के साथ तथा पुरुषवेद वाला स्त्री के साथ रमण करके सुख प्राप्त कर लेता है। नपुंसकवेद वाले की वासनाएँ स्त्री-पुरुष वेद वालों की अपेक्षा कई गुणी होती है, लेकिन वह न पुरुष के साथ रम सकता है और न स्त्री के साथ इसलिए वह वासनाओं से संतप्त रहता है। नरकों में यदि स्त्री-पुरुष वेद होगा तो उन्हें सुख मिल जायेगा। परन्तु वहाँ पंचेन्द्रियजनित विषयों से उत्पन्न कोई सुख नहीं होता है, शायद इसीलिए उनके नपुंसक वेद ही होता है।

निरन्तर दुःखी होने के कारण उनके दो (स्त्री-पुरुष) वेद नहीं होते हैं। (ध. १/३४७)

९. प्रश्न : चतुर्थ नरक के नारकियों के कितनी कषाय होती है ?

उत्तर : चतुर्थ नरक के नारकियों के अधिक से अधिक २३ कषायें होती हैं – अनन्तानुबन्धी चतुष्क, अप्रत्याख्यानावरण चतुष्क, प्रत्याख्यानावरण चतुष्क, संज्वलन चतुष्क तथा स्त्रीवेद-पुरुषवेद के बिना हास्यादि नोकषाय। कम-से-कम १९ कषायें होती हैं। अनन्तानुबन्धी चतुष्क का अभाव होने पर सम्यग्दृष्टि जीव के १९ कषायें होती हैं।

नोट : इसी प्रकार सभी नरकों में जानना चाहिए।

१०. प्रश्न : क्या कोई ऐसा सम्यग्दृष्टि नारकी है जिसके अवधिज्ञान नहीं होता है ?

उत्तर : हाँ, जो सम्यग्दृष्टि जीव (मनुष्य) अवधिज्ञान लेकर नरक में नहीं जाता है, उस सम्यग्दृष्टि नारकी के विग्रहगति में निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में तथा पर्याप्त अवस्था में जब तक अवधिज्ञान उत्पन्न नहीं होता तब तक उस सम्यग्दृष्टि नारकी के अवधिज्ञान नहीं होता है।

११. प्रश्न : क्या सभी नारकियों के छहों ज्ञान होते हैं ?

उत्तर : नहीं, सभी नारकियों के छहों ज्ञान नहीं होते हैं-

सम्यग्दृष्टि नारकी के तीन ज्ञान होते हैं - मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान।

मिथ्यादृष्टि तथा सासादन सम्यग्दृष्टि के तीन - कुज्ञान (अज्ञान) होते हैं
कुमतिज्ञान, कुश्रुतज्ञान, कुअवधिज्ञान

मिश्र गुणस्थानवर्ती नारकी के तीनों ही ज्ञान मिश्र रूप होते हैं।

१२. प्रश्न : क्या सभी नारकियों के समान रूप से तीनों अशुभ लेश्याएँ होती हैं ?

उत्तर : नहीं, सभी नरकों में अलग-अलग लेश्याएँ होती हैं -

नरक	-	लेश्या
प्रथम नरक में	-	जघन्य कापोत।
दूसरे नरक में	-	मध्यम कापोत।
तीसरे नरक में	-	उत्कृष्ट कापोत तथा जघन्य नील।
चतुर्थ नरक में	-	मध्यम नील।
पंचम नरक में	-	उत्कृष्ट नील तथा जघन्य कृष्ण।
छठे नरक में	-	मध्यम कृष्ण।
सातवें नरक में	-	उत्कृष्ट कृष्ण। (त. सा. २० टी.)

१३. प्रश्न : नारकियों के अशुभ लेश्या ही क्यों होती है ?

उत्तर : नारकियों के नित्य संक्लेश परिणाम ही होते हैं, इसलिए उनके अशुभ लेश्याएँ ही होती हैं।

१४. प्रश्न : क्या नारकियों के द्रव्य और भाव से अशुभ लेश्या ही होती है ?

उत्तर : हाँ, नारकियों के शरीर नियम से हुण्डक संस्थान वाले ही होते हैं, इसलिए उनके द्र से अशुभ लेश्या ही होती है। सभी नारकियों के पर्याप्तावस्था में द्रव्य से कृष्ण लेश्या ही होती है। **(ध. २/४५०)**

नारकानित्याशुभ. (त. सू. ३/३) के अनुसार उनके भाव भी हमेशा अशुभतर ही रहते हैं इसलिए उनके भाव से भी अशुभ लेश्या ही होती है।

१५. प्रश्न : नारकियों की अपर्याप्त-अवस्था में कितने सम्यक्त्व होते हैं ?

उत्तर : नारकियों की अपर्याप्त-अवस्था में तीन सम्यक्त्व होते हैं-(१) मिथ्यात्व (२) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व (३) क्षायिक सम्यक्त्व।

(१) घम्मा नरक की अपर्याप्त अवस्था में तीनों सम्यक्त्व होते हैं। क्षायोपशमिक सम्यक्त्व कृतकृत्यवेदक की अपेक्षा समझना चाहिए। वंशा आदि माघवी पर्यन्त नरकों की अपर्याप्त अवस्था में केवल एक मिथ्यात्व ही होता है।

नोट - बद्धायुष्क तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला भी क्षायोपशमिक सम्यक्त्व को लेकर प्रथम नरक में नहीं जा सकता है। क्योंकि बद्धायुष्क कृतकृत्य वेदक तथा क्षायिक सम्यग्दृष्टि को छोड़कर शेष कोई भी जीव सम्यग्दर्शन को लेकर नरक में नहीं जा सकता है।

(२) प्रथमोपशम सम्यक्त्व तथा मिश्र सम्यक्त्व में मरण नहीं होता और सासादन को लेकर जीव नरक में नहीं जाता इसलिए नारकियों की अपर्याप्त अवस्था में ये तीनों सम्यक्त्व नहीं होते हैं।

१६. प्रश्न : नारकी कौन-कौनसा सम्यग्दर्शन उत्पन्न कर सकते हैं ?

उत्तर : नारकी दो सम्यग्दर्शन उत्पन्न कर सकते हैं- (१) प्रथमोपशम-सम्यग्दर्शन (२) क्षायोपशमिक सम्यग्दर्शन।

नारकी क्षायिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न नहीं कर सकते; क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन का प्रारम्भ कर्मभूमिया मनुष्य ही करते हैं। कृतकृत्य वेदक वहाँ जाकर सम्यक् प्रकृति का क्षय करके क्षायिक सम्यग्दर्शन का निष्ठापन कर सकता है।

नोट - सम्यक्त्व मार्गणा में से नारकी मिथ्यात्व, सासादन तथा मिश्र सम्यक्त्व को भी उत्पन्न कर सकते हैं।

१७. प्रश्न : नारकियों की पर्याप्त अवस्था में कितने सम्यक्त्व होते हैं ?

उत्तर : प्रथम नरक के नारकियों की पर्याप्त अवस्था में सभी सम्यक्त्व होते हैं। दूसरे से सातवें नरक तक क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं होता है, क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव मरकर प्रथम नरक से आगे नहीं जाता है। अर्थात् प्रथम नरक में सभी सम्यक्त्व होते हैं और शेष नरकों में क्षायिक सम्यक्त्व के बिना पाँच ही सम्यक्त्व होते हैं।

१८.प्रश्न : नारकियों में पंचमादि गुणस्थान क्यों नहीं होते ?

उत्तर : अप्रत्याख्यानावरण कषाय के उदय से सहित हिंसा में आनन्द मानने वाले और नाना प्रकार के प्रचुर दुःखों से संयुक्त उन सब नारकी जीवों के देशविरत आदिक उपरितन दश गुणस्थानों के हेतुभूत जो विशुद्ध परिणाम हैं, वे कदाचित् भी नहीं होते हैं।(ति. प. २/२७५-७६)

प्रथमादि चार गुणस्थानों के अतिरिक्त ऊपर के गुणस्थानों का नरक में सद्भाव नहीं है; क्योंकि संयमासंयम और संयम पर्याय के साथ नरकगति में उत्पत्ति होने का विरोध है। (ध. १/२०८)

१९.प्रश्न : नारकियों के आर्त्तध्यान कैसे घटित होते हैं ?

उत्तर : नारकियों में आर्त्तध्यान -

इष्ट वियोगज : नारकी जब अपनी विक्रिया से शस्त्रादि बनाते हैं, उसको यदि दूसरे नारकी

छीन ले, ध्वस्त (नष्ट) कर दे तो इष्ट वियोग हो सकता है, हो जाता है। तीसरे नरक तक कोई देव किसी को सम्बोधन करने गया। वह जब संबोधन करके चला जाता है, तो उसके वियोग में नारकी को इष्ट वियोग आर्त्तध्यान हो सकता है।

अनिष्ट संयोगज : एक नारकी को जब दूसरे नारकी मारते हैं, दुःख देते हैं तो उन्हें दूर करने के लिए बार-बार विचार उत्पन्न होते हैं तब उस नारकी के अनिष्ट संयोगज आर्त्तध्यान हो सकता है।

वेदना-आर्त्तध्यान : नारकियों के शीत-उष्ण आदि वेदनाओं को दूर करने की भावनाओं से वेदना आर्त्तध्यान संभव है।

निदान-आर्त्तध्यान : नारकी जातिस्मरण से भोगों को जानकर भावी भोगों की आकांक्षा कर सकते हैं।

तीसरे नरक तक आये हुए देवों के वैभव को देखकर निदान कर सकते हैं। नारकियों में ऐसे ही और भी आर्त्तध्यान हो सकते हैं।

२०. प्रश्न : नारकी जीव भगवान के दर्शन, पूजा, स्वाध्याय, गुरुओं की भक्ति, आहारदा आदि कुछ नहीं कर सकता है, तो उसके धर्मध्यान कैसे हो सकता है ?

उत्तर : भगवान की पूजा, दर्शनादि कार्य एकान्त से धर्मध्यान नहीं हैं। पूजा आदि कार्य धर्मध्यान प्राप्त करने की पूर्व भूमिका है। इन सब कार्यों को करते हुए भी मिथ्यादृष्टि जीव के धर्मध्यान नहीं होता है। सम्यग्दृष्टि नारकी के "जो जिनेन्द्र भगवान ने सच्चे देव-शास्त्र -गुरु, तत्त्व. द्रव्य, मोक्षमार्ग आदि का स्वरूप बताया है वही सच्चा है, उसी से मेरा कल्याण अर्थात् मुझे शाश्वत सच्चे सुख की प्राप्ति हो सकती है" इस प्रकार की श्रद्धा (आज्ञा सम्यक्त्व) होती है और इसी रूप में नारकी के एक आज्ञाविचय धर्मध्यान होता है।

२१. प्रश्न : सम्यग्दृष्टि नारकी के आस्रव के कितने प्रत्यय होते हैं ?

उत्तर : प्रथम नरक में सम्यग्दृष्टि नारकी के आस्रव के ४२ प्रत्यय होते हैं- १२ अविरति, १९ कषाय (अनन्तानुबन्धी चतुष्क तथा दो वेद रहित) तथा ११ योग (औदारिकद्विक तथा आहारकद्विक बिना)। दूसरे आदि नरकों में वैक्रियिक मिश्र तथा कार्मण काय योग सम्बन्धी आस्रव के प्रत्यय भी निकल जाने से ४० प्रत्यय ही होते हैं।

तालिका संख्या २

तिर्यंच-गति

क्र.	स्थान	संख्या	विवरण	विशेष
१.	गति	१	तिर्यंचगति	
२.	इन्द्रिय	५	पाँचों इन्द्रियाँ	
३.	काय	६	१ त्रस. ५ स्थावर	
४.	योग	११	४ मन. ४ वचन ३ काय.	वैक्रियिकद्विक तथा आहारकद्विक नहीं हैं।
५.	वेद	३	तीनों वेद	
६.	कषाय	२५	१६ कषाय ९ नोकषाय	
७.	ज्ञान	६	३ कुज्ञान, ३ ज्ञान	मन:पर्यय तथा केवलज्ञान नहीं है।
८.	संयम	२	संयमासंयम, असंयम	सामायिकादि संयम नहीं हैं।
९.	दर्शन	३	चक्षु, अचक्षु, अवधि	केवलदर्शन नहीं है।
१०.	लेश्या	६	द्रव्य और भावरूप से सभी लेश्याएँ	
११.	भव्यत्व	२	भव्यत्व, अभव्यत्व	

१२.	सम्यक्त्व	६	क्षा. क्षयो. उप. सासा. मिश्र. मि.	क्षायिक सम्यक्त्व भोगभूमि की अपेक्षा होता है।
१३.	संज्ञी	२	सैनी, असैनी	
१४.	आहार	२	आहारक, अनाहारक	
१५.	गुणस्थान	५	मि. सा. मिश्र. अवि. संयमा.	पाँचवाँ गुणस्थान कर्म-भूमि की अपेक्षा होता है।
१६.	जीवसमास	१९	१४ स्थावर, ५ त्रस सम्बन्धी	
१७.	पर्याप्ति	६	छहों पर्याप्तियाँ	
१८.	प्राण	१०	५ इन्द्रि., ३ बल, श्वा. आयु.	१० प्राण संज्ञी पंचेन्द्रिय के ही होते हैं।
१९.	संज्ञा	४	चारों संज्ञाएँ	
२०.	उपयोग	९	६ ज्ञानो. ३ दर्शनोपयोग	
२१.	ध्यान	११	४ आ. ४ रौ. ३ धर्म.	संस्थान विचय धर्मध्यान नहीं है।
२२.	आस्रव	५३	५ मि. १२ अ. २५ क. ११ यो.	
२३.	जाति	६२लाख	एकेन्द्रिय से संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच तक	नरक, मनुष्य तथा देव सम्बन्धी जातियाँ नहीं हैं।
२४.	कुल	१३४$\frac{१}{२}$ ला.क.	एकेन्द्रिय से संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच तक	नरक, मनुष्य तथा देव सम्बन्धी कुल नहीं हैं।

१. प्रश्न : **तिर्यञ्च कितने प्रकार के होते हैं ?**

उत्तर : तिर्यञ्चगति के जीव पृथ्वी आदि एकेन्द्रिय के भेद से, शम्बूक, जू, मच्छर आदि विकलेन्द्रिय के भेद से, जलचर-थलचर, नभचर, द्विपद, चतुष्पदादि पंचेन्द्रिय के भेद से बहुत प्रकार के होते हैं। **(पं.का.ता.११८)**

जन्म की अपेक्षा तिर्यञ्च दो प्रकार के होते हैं-(१) गर्भज (२) सम्मूर्च्छिम जन्म वाले **(का. अ. १३०)**

२. प्रश्न : **तिर्यञ्च जीव कहाँ-कहाँ रहते हैं ?**

उत्तर : पन्द्रह कर्म-भूमियों में भी तिर्यञ्च रहते हैं। ढाईद्वीप के बाहर असंख्यात द्वीप-समुद्रों में स्थित सभी भोगभूमियों तथा आधे स्वयंभूरमण द्वीप और स्वयंभूरमण समुद्र में तिर्यञ्च ही रहते हैं। भोग-भूमियों में भी तिर्यञ्च रहते हैं। विशेष रूप से एकेन्द्रिय तिर्यञ्च सर्वलोक में ठसाठस भरे हुए हैं।

३. प्रश्न : **किन-किन तिर्यञ्चों के नपुंसक वेद ही होता है ?**

उत्तर : एकेन्द्रिय से लेकर चतुरिन्द्रिय तक के सभी जीव और सम्मूर्च्छन पर्याप्त पंचेन्द्रिय तथा लब्ध्यपर्याप्तक पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च भी नपुंसकवेद वाले ही होते हैं। **(त. सू. २/५०)**

४. प्रश्न : तिर्यञ्चों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में कितनी लेश्याएँ होती हैं ?

उत्तर : तिर्यञ्चों की निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में तीन अशुभ लेश्याएँ ही होती हैं क्योंकि तेजोलेश्या और पद्मलेश्या वाले देव यदि तिर्यञ्चों में उत्पन्न होते हैं तो नियम से उनकी शुभ लेश्याएँ नष्ट हो जाती हैं इसलिए तिर्यञ्चों के निर्वृत्यपर्याप्त अवस्था में तीन अशुभ लेश्याएँ ही होती हैं। (ध. २/४७३)

५. प्रश्न : तिर्यञ्चों में क्षायिकसम्यग्दर्शन किस अपेक्षा से होता है ?

उत्तर : जिस मनुष्य ने तिर्यञ्च आयु का बन्ध कर लिया है फिर क्षायिकसम्यक्त्व का प्रतिष्ठापक हुआ है या क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त किया है तो वह मरकर भोगभूमि में तिर्यञ्च बनता है। कर्मभूमिया तिर्यञ्चों के किसी भी अपेक्षा क्षायिक सम्यग्दर्शन नहीं होता है।

६. प्रश्न : **क्या बद्धायुष्क सम्यग्दृष्टि मनुष्य के समान बद्धायुष्क सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्च भी भोगभूमि में जा सकता है ?**

उत्तर : नहीं, तिर्यञ्च क्षायिक सम्यग्दर्शन का प्रतिष्ठापक नहीं होता और न कर्मभूमिया तिर्यञ्चों को क्षायिकसम्यग्दर्शन ही होता है, क्योंकि, क्षायिक-सम्यग्दर्शन का प्रारम्भ कर्मभूमिया मनुष्य ही केवली, श्रुतकेवली के पादमूल में करते हैं। तथा जिसने तिर्यञ्च, मनुष्य और नरकायु को बाँध लिया है वह मिथ्यात्व के साथ ही मरणकर तिर्यञ्चादि गतियों में जाता है, क्योंकि सम्यग्दृष्टि मनुष्य (बद्धायुष्क मनुष्य को छोड़कर) और तिर्यञ्च नियम से स्वर्ग में ही जाते हैं।

७. प्रश्न : **बद्धायुष्क किसे कहते हैं ?**

उत्तर : जिसने अगले भव की आयु बाँध ली है वह बद्धायुष्क कहलाता है। बद्धायुष्क का कथन क्षायिक एवं कृतकृत्यवेदक की मुख्यता से ही किया गया है।

८. प्रश्न : क्या इसी प्रकार बद्धायुष्क मुनि भी भोगभूमिया तिर्यञ्च बन सकता है ?

उत्तर : नहीं, जिस मनुष्य ने देवायु को छोड़कर शेष किसी भी आयु का बन्ध कर लिया है, वह अणुव्रत तथा महाव्रत धारण नहीं कर सकता है, ऐसा नियम है। इसलिए बद्धायुष्क मुनि भी भोगभूमि में उत्पन्न नहीं हो सकता है। (गो. क. ३३४) इसी प्रकार देवायु को छोड़कर शेष आयु बाँधने वाला तिर्यञ्च भी अणुव्रत धारण नहीं कर सकता है।

९. प्रश्न : क्या मत्स्य भी क्षायिक सम्यग्दृष्टि हो सकता है ?

उत्तर : नहीं, मत्स्य क्षायिक सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकता है क्योंकि तिर्यञ्चों में क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव भोग-भूमियों में ही होते हैं। भोग-भूमि में जलचर जीव नहीं पाये जाते हैं (ति.प. ४/३२८) इसलिए मत्स्य क्षायिक सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकता है। मत्स्य नियम से कर्मभूमि में ही होते हैं।

नोट - इसी प्रकार सम्मूर्च्छन मत्स्य के प्रथमोपशम सम्यक्त्व भी नहीं होता है क्योंकि प्रथमोपशमसम्यक्त्व गर्भज जीवों के ही होता है। (ध.पु.)

१०.प्रश्न : सम्मूर्च्छन तिर्यञ्चों के कौन-कौनसे सम्यक्त्व हो सकते हैं ?

उत्तर : सम्मूर्च्छन तिर्यञ्चों के चार सम्यक्त्व हो सकते हैं- (१) मिथ्यात्व (२) सासा... (३) सम्यग्मिथ्यात्व (४) क्षायोपशमिक सम्यक्त्व। भोगभूमि में सम्मूर्च्छन पंचेन्द्रिय जीव नहीं होते हैं, इसलिए सम्मूर्च्छन तिर्यञ्चों में क्षायिक-सम्यक्त्व नहीं कहा है।

११.प्रश्न : यदि सम्मूर्च्छन जीवों के उपशम-सम्यक्त्व नहीं होता है, तो उनके सासादन-सम्यक्त्व कैसे हो सकता है, क्योंकि उपशम सम्यक्त्व के बिना सासादन सम्यक्त्व नहीं हो सकता है ?

उत्तर : यद्यपि सम्मूर्च्छन जीवों के प्रथमोपशम सम्यक्त्व नहीं होता है फिर भी पूर्व भव से अर्थात् कोई मनुष्य-तिर्यञ्च सासादन-सम्यक्त्व को लेकर सम्मूर्च्छन पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होता है तो उसके सासादन-सम्यक्त्व का अस्तित्व बन जाता है।

१: हुण्डावसर्पिणी काल के प्रभाव से भगवान आदिनाथ स्वामी के समय में भोगभूमि में ही तीर्थंकर, संयमी, संयमासंयम... आदि हुए थे।

१२.प्रश्न : क्या तिर्यञ्चों की निर्वृत्यपर्याप्तक-अवस्था में भी सभी सम्यक्त्व होते हैं ?

उत्तर : नहीं, तिर्यञ्चों की निर्वृत्यपर्याप्तक-अवस्था में चार सम्यक्त्व होते हैं- (१) मिथ्यात्व (२) सासादन (३) क्षयोपशम और (४) क्षायिक सम्यक्त्व। उपशम और मिश्र नहीं होते हैं।

नोट - क्षयोपशम सम्यक्त्व भोगभूमि में जाते समय कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा कहा गया है। क्षायिक-सम्यक्त्व भोगभूमि की अपेक्षा है।

१३.प्रश्न : किन-किन तिर्यञ्चों के पंचमगुणस्थान नहीं होता है?

उत्तर : (१) एकेन्द्रियादि असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्यन्त जीवों के।

(२) संज्ञी पंचेन्द्रिय में भी लब्ध्यपर्याप्तक जीवों के।

(३) समस्त भोगभूमिज तथा कुभोगभूमिज जीवों के[१] तथा

(४) म्लेच्छखण्ड में तिर्यञ्चों में पंचम गुणस्थान प्राप्त करने की योग्यता नहीं है।

नोट - म्लेच्छखण्ड से यहाँ आकर हाथी-घोड़ा आदि कोई पंचमगुणस्थान प्राप्त कर सकते हैं। (मनुष्यों के समान तिर्यञ्चों का कथन आगम में नहीं आता है)

१४.प्रश्न : क्या भोगभूमि में किसी भी अपेक्षा पंचमगुणस्थानवर्ती तिर्यञ्च नहीं हो सकते हैं

उत्तर : भोगभूमि में भी पंचमगुणस्थानवर्ती तिर्यञ्च हो सकते हैं। वैर के सम्बन्ध से देवों अथवा दानवों के द्वारा कर्मभूमि से उठाकर लाये गये कर्मभूमिज तिर्यञ्चों का सब जगह सद्भाव होने में कोई विरोध नहीं आता है, इसलिए वहाँ पर अर्थात् भोग-भूमि में भी पंचम गुणस्थानवर्ती तिर्यञ्च का अस्तित्व बन जाता है। (ध. १/४०४)

नोट : इसी प्रकार संयतासंयत मनुष्य व संयत मुनि भी पाये जा सकते हैं।

१५.प्रश्न : क्या क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्चों के संयतासंयत गुणस्थान हो सकता है ?

उत्तर : नहीं; क्योंकि तिर्यञ्चों में यदि क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव उत्पन्न होते हैं तो वे भोगभूमि में ही उत्पन्न होते हैं, दूसरी जगह नहीं। परन्तु भोगभूमि में उत्पन्न हुए जीवों के अणुव्रतों की उत्पत्ति नहीं होती है, वहाँ पर अणुव्रत होने में आगम से विरोध है। (ध. १/४०५)

१६. प्रश्न : किन-किन तिर्यञ्चों के कितने-कितने प्राण होते हैं?

उत्तर : तिर्यञ्चों के प्राण –

तिर्यञ्च	प्राण		
	निर्वृत्य-पर्याप्तावस्था	पर्याप्तावस्था	विशेष
एकेन्द्रियों के	३	४	(स्पर्शन इन्द्रिय, कायबल, श्वासोच्छ्वास, आयु)
द्वीन्द्रियों के	४	६	(२ इन्द्रिय, वचन-कायबल, श्वासोच्छ्वास, आयु)
त्रीन्द्रियों के	५	७	(३ इन्द्रिय, २ बल श्वासो. आयु)
चतुरिन्द्रियों के	६	८	(४ इन्द्रिय, २ बल श्वासो. आयु)
असैनी पंचेन्द्रियों के	७	९	(५ इन्द्रिय, २ बल श्वासो. आयु)
सैनी पंचेन्द्रियों के	७	१०	(५ इन्द्रिय, ३ बल श्वासो. आयु)

नोट – • सभी जीवों के निर्वृत्यपर्याप्तक अवस्था में श्वासोच्छ्वास, वचनबल तथा मनोबल नहीं होते हैं। • असैनी पर्यन्त जीवों के मनोबल नहीं होता है।

१७. प्रश्न : सम्यग्दृष्टि तिर्यञ्चों के आस्रव के कितने प्रत्यय हो सकते हैं?

उत्तर : चतुर्थगुणस्थानवर्ती तिर्यञ्चों के आस्रव के ४४ प्रत्यय हो सकते हैं-

१२ अविरति २१ कषाय (अनन्तानुबन्धी बिना) तथा

११ योग (४ मनो. ४ वचन. ३ काय.)

औदारिकमिश्र तथा कार्मण काययोग भोगभूमि की अपेक्षा बन जायेंगे।

१८. प्रश्न : तिर्यञ्चों की बासठ लाख जातियाँ कौन-कौन सी हैं ?

उत्तर : तिर्यञ्चों की जातियाँ -

(१) नित्यनिगोद की	- ७ लाख	(७) वनस्पतिकायिक की	- १०लाख
(२) इतर निगोद की	- ७ लाख	(८) द्वीन्द्रिय की	- २ लाख
(३) पृथ्वीकायिक की	- ७ लाख	(९) त्रीन्द्रिय की	- २ लाख
(४) जलकायिक की	- ७ लाख	(१०) चतुरिन्द्रिय की	- २ लाख
(५) अग्निकायिक की	- ७ लाख	(११) पंचेन्द्रिय की	- ४ लाख
(६) वायुकायिक की	- ७ लाख	कुल = ६२ लाख	

१९. प्रश्न : तिर्यञ्चों के १३४ $\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल कौन-कौन से हैं ?

उत्तर : तिर्यञ्चों के कुल-

(१) पृथ्वीकायिक के - २२ लाख करोड़
(२) जलकायिक के - ७ लाख करोड़
(३) अग्निकायिक के - ३ लाख करोड़
(४) वायु कायिक के - ७ लाख करोड़
(५) वनस्पतिकायिक के - २८ लाख करोड़
(६) द्वीन्द्रिय के - ७ लाख करोड़
(७) त्रीन्द्रिय के - ८ लाख करोड़
(८) चतुरिन्द्रिय के - ९ लाख करोड़
(९) जलचर के - १२ $\frac{१}{२}$ लाख करोड़
(१०) थलचर के - १९ लाख करोड़
(११) नभचर के - १२ लाख करोड़

योग = १३४ $\frac{१}{२}$ लाख करोड़ कुल

२०. प्रश्न : भोगभूमिया तिर्यञ्चों के कितने कुल होते हैं ?

उत्तर : भोगभूमिया तिर्यञ्चों के ३१ लाख करोड़ कुल होते हैं–

थलचर के - १९ लाख करोड़ तथा नभचर के १२ लाख करोड़। भोगभूमि में एकेन्द्रिय, विकलत्रय तथा जलचर जीव नहीं पाये जाते हैं। इसलिए उनके कुल ग्रहण नहीं किये है।

नोट - यद्यपि वहाँ एकेन्द्रिय जीव होते हैं, लेकिन वे भोगभूमिया नहीं होते हैं, सामान्य एकेन्द्रिय हैं, इसलिए यहाँ उनके कुलों का ग्रहण नहीं किया है।

जय जिनेन्द्र